International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

हिंदी में क्षेत्रीय बोलियाँ और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति

डॉ. सरयू शर्मा *
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: *डॉ. सरयू शर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15510918

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी भाषा की विविध क्षेत्रीय बोलियों और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य हिंदी की प्रमुख बोलियों की भाषिक विशेषताओं, उनके ऐतिहासिक विकास और साहित्यिक योगदान का अन्वेषण करना है। शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार क्षेत्रीय बोलियाँ हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और आधुनिक समय में इनका संरक्षण एवं संवर्धन क्यों आवश्यक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 16-01-2025
- **Accepted:** 10-02-2025
- **Published:** 27-02-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025:207-211
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

शर्मा स. हिंदी में क्षेत्रीय बोलियाँ और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2025;4(1):207-211.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: हिंदी साहित्य, हिंदी भाषा, स्थानीय संस्कृति, ब्रज भाषा, भक्तिकाल

1. प्रस्तावना

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, जिसका विस्तार उत्तर भारत के विशाल भू-भाग पर है। हिंदी की यह व्यापकता इसकी अनेक क्षेत्रीय बोलियों के कारण है, जो अपनी विशिष्ट शब्दावली, उच्चारण, व्याकरण और अभिव्यक्ति शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। इन बोलियों ने न केवल हिंदी भाषा को समृद्ध किया है, बल्कि साहित्य के क्षेत्र में भी अपना विशिष्ट योगदान दिया है।

हिंदी भाषा के विकास में इन क्षेत्रीय बोलियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। ये बोलियाँ स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और जीवन-मूल्यों को प्रतिबिंबित करती हैं, जिससे हिंदी साहित्य में विविधता और गहराई आती है। प्रस्तुत शोध पत्र में हम हिंदी की प्रमुख क्षेत्रीय बोलियों का अध्ययन करेंगे और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेंगे।

© 2025 डॉ सरयू शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. हिंदी की प्रमुख क्षेत्रीय बोलियाँ

2.1 ब्रज भाषा

ब्रज भाषा मथुरा, आगरा, अलीगढ़, हाथरस और धौलपुर क्षेत्र में बोली जाती है। यह अपनी मधुरता और लयात्मकता के लिए प्रसिद्ध है। ब्रज भाषा की मुख्य विशेषताएँ:

- स्वर परिवर्तन: 'अ' का 'औ' में परिवर्तन (जैसे 'कर' का 'कौर')
- अनुनासिकता की प्रधानता
- विशिष्ट क्रिया रूप (जैसे 'करै' - करता है, 'जात' - जाता है)

2.2 अवधी

अवधी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र (लखनऊ, फैजाबाद, अयोध्या, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़) में बोली जाने वाली भाषा है। अवधी की प्रमुख विशेषताएँ:

- 'व' का 'ब' में परिवर्तन (जैसे 'वह' का 'बो')
- अंत्य 'अ' का लोप (जैसे 'राम' का 'राम्')
- विशिष्ट सर्वनाम प्रयोग (जैसे 'मोरा', 'तोरा')

2.3 भोजपुरी

बिहार, उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग और झारखंड के कुछ हिस्सों में बोली जाती है। भोजपुरी की प्रमुख विशेषताएँ:

- 'च' का 'स' में परिवर्तन (जैसे 'चल' का 'सल')
- विशिष्ट क्रिया रूप (जैसे 'देखल' - देखा, 'गइल' - गया)
- जोरदार उच्चारण और विशिष्ट लय

2.4 बुंदेली

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रचलित है। बुंदेली की प्रमुख विशेषताएँ:

- 'श' का 'स' में परिवर्तन
- पुरुष और स्त्रीलिंग के बीच स्पष्ट अंतर
- विशिष्ट क्रिया रूप (जैसे 'जात रयो' - जा रहा था)

2.5 राजस्थानी (मारवाड़ी, मेवाती, जयपुरी)

राजस्थान में बोली जाने वाली विभिन्न बोलियाँ जो हिंदी से बहुत निकटता रखती हैं। मुख्य विशेषताएँ:

- 'स' का 'ह' में परिवर्तन (जैसे 'सोना' का 'होनो')
- 'आ' का 'ओ' में परिवर्तन
- संक्षिप्त शब्द रचना

2.6 हरियाणवी

हरियाणा राज्य में बोली जाती है। हरियाणवी की प्रमुख विशेषताएँ:

- 'ज' का 'य' में परिवर्तन (जैसे 'जाना' का 'याना')
- संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग
- विशिष्ट वाक्य संरचना

2.7 छत्तीसगढ़ी

छत्तीसगढ़ राज्य में बोली जाती है। छत्तीसगढ़ी की प्रमुख विशेषताएँ:

- 'छ' का अधिक प्रयोग
- विशिष्ट क्रिया रूप (जैसे 'करथे' - करता है)
- आदिवासी भाषाओं का प्रभाव

3. क्षेत्रीय बोलियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति

3.1 ब्रज भाषा का साहित्य

ब्रज भाषा का साहित्य मुख्यतः भक्तिकाल में फला-फूला। सूरदास, नंददास, परमानंददास, कुंभनदास जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं में ब्रज भाषा का प्रयोग किया। 'सूरसागर', 'भ्रमरगीत', 'रासपंचाध्यायी' जैसी कृतियाँ ब्रज भाषा के साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

ब्रज भाषा की विशेषताएँ:

- श्रृंगारिक और भक्ति रस की प्रधानता
- लयात्मकता और संगीतात्मकता
- चित्रात्मक अभिव्यक्ति

उदाहरण स्वरूप सूरदास की एक पंक्ति:

"मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।
ब्याल हाथ दै काको बियो, दधि मैं दई दुरायो॥"

3.2 अवधी का साहित्य

अवधी भाषा में तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' सबसे प्रसिद्ध कृति है। इसके अतिरिक्त जायसी की 'पद्मावत', कुतुबन की 'मृगावती' और उसमान की 'चित्रावली' जैसी रचनाएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

अवधी साहित्य की विशेषताएँ:

- महाकाव्यात्मक शैली
- लोक-जीवन के चित्रण
- नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की प्रधानता

तुलसीदास के 'रामचरितमानस' से एक उदाहरण:
"जागहिं बेद धर्म हिंसा दिनु राती।
बढ़हिं असुर अधम लोग सब भाँति॥"

3.3 भोजपुरी का साहित्य

भोजपुरी साहित्य लोकगीतों, कथाओं और नाटकों के लिए प्रसिद्ध है। भीखारी ठाकुर के नाटक, हरिऔध की कविताएँ और महेंद्र मिश्र की कहानियाँ भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

भोजपुरी साहित्य की विशेषताएँ:

- लोक तत्वों की प्रधानता
- सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा
- हास्य और व्यंग्य का समावेश

भोजपुरी लोकगीत का एक उदाहरण:

"जब से चलल बिदेसवा, सुनवा हमार गाँव।
ना आइले हमर पिया, ना भेजले कोई सँदेसवा॥"

3.4 बुंदेली का साहित्य

बुंदेली में ईसुरी, पद्माकर और दुर्गासहाय जैसे कवियों ने उत्कृष्ट साहित्य रचा है। बुंदेली वीर रस, शौर्य और प्रकृति चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।

© 2025 डॉ सरयू शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बुंदेली साहित्य की विशेषताएँ:
- वीर रस की प्रधानता
- प्रकृति चित्रण की सजीवता
- जीवंत लोक-कथाएँ

ईसुरी की एक प्रसिद्ध रचना:
"अलबेला जू को रूप निरखि के,
बागन में बौरी भई कोइलिया।"

3.5 राजस्थानी का साहित्य
राजस्थानी साहित्य में ढोला-मारू रा दूहा, पृथ्वीराज रासो, वीर सतसई जैसी रचनाएँ शामिल हैं। इन रचनाओं में शौर्य, प्रेम और त्याग के भाव प्रमुख हैं।

राजस्थानी साहित्य की विशेषताएँ:
- वीरता और शौर्य का चित्रण
- प्रेम प्रसंगों की कोमलता
- लोक संस्कृति का चित्रण

मीराबाई का एक पद:
"पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे,
मैं तो मेरे नारायण की आपही हो गई दासी रे।"

3.6 हरियाणवी का साहित्य
हरियाणवी साहित्य में लोकगीत, रागनियाँ और लोककथाएँ प्रमुख हैं। पंडित लखमीचंद और कवि सूरजभान के साहित्य हरियाणवी भाषा के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

हरियाणवी साहित्य की विशेषताएँ:
- सामाजिक मुद्दों का चित्रण
- हास्य-व्यंग्य की प्रधानता
- ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण

हरियाणवी रागनी का एक उदाहरण:
"म्हारी झोपड़ी के आगे खड़ी पलाश की डाल,
जिसका फूल रंग दे म्हाने लाल रे लाल॥"

3.7 छत्तीसगढ़ी का साहित्य
छत्तीसगढ़ी साहित्य में लोकगीत, लोककथाएँ और पंडवानी जैसी लोक कला रूप शामिल हैं। सुन्दरलाल शर्मा और डॉ. विनय कुमार पाठक जैसे साहित्यकारों ने छत्तीसगढ़ी साहित्य को समृद्ध किया है।

छत्तीसगढ़ी साहित्य की विशेषताएँ:
- आदिवासी संस्कृति का प्रभाव
- प्रकृति और ग्रामीण जीवन का चित्रण
- मौखिक परंपरा की प्रधानता

छत्तीसगढ़ी लोकगीत का एक उदाहरण:
"दादा हो दादा, तोर माटी म गड़त जाबो।
तोर माटी म पानी म घुलत जाबो॥"

4. क्षेत्रीय बोलियों का आधुनिक साहित्य में प्रभाव
आधुनिक हिंदी साहित्य पर क्षेत्रीय बोलियों का गहरा प्रभाव है। आधुनिक लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाओं में क्षेत्रीय बोलियों के शब्दों, मुहावरों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया है, जिससे उनकी रचनाओं में यथार्थवाद और स्थानीयता का समावेश हुआ है।

4.1 उपन्यास और कहानियों में क्षेत्रीय बोलियाँ
फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', शिवप्रसाद सिंह के 'अलग-अलग वैतरणी', नागार्जुन के 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची' जैसे उपन्यासों में क्षेत्रीय बोलियों का प्रभावशाली प्रयोग देखने को मिलता है। इन रचनाओं में लेखकों ने पात्रों के संवादों और वर्णनों में क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग करके कथा को अधिक सजीव और यथार्थपरक बनाया है।
उदाहरण: फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' में बिहारी बोली का प्रयोग:
"हमनी के इहाँ से जाय के नइखे। हम त इहीं रहब। हमार बाप-दादा इहीं रहल।"

4.2 कविता में क्षेत्रीय बोलियाँ
केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, नागार्जुन, धूमिल जैसे आधुनिक कवियों ने अपनी कविताओं में क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग किया है। इनकी कविताओं में क्षेत्रीय बोलियों के शब्द और अभिव्यक्तियाँ कविता को अधिक प्रभावशाली और जनसामान्य से जुड़ी हुई बनाती हैं।

उदाहरण: नागार्जुन की कविता में भोजपुरी शब्दों का प्रयोग:
"अकाल और उसके बाद,
अबकी बड़ी लंबी सूखा परल,
बनियन के मकई के डंठल भी बिका गइल॥"

4.3 नाटक और रंगमंच में क्षेत्रीय बोलियाँ
हबीब तनवीर, भीष्म साहनी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना जैसे नाटककारों ने अपने नाटकों में क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग किया है। इससे नाटकों में स्थानीय रंग और पात्रों की विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है।
उदाहरण: हबीब तनवीर के 'चरणदास चोर' नाटक में बुंदेली शब्दों का प्रयोग:
"का कहूँ महराज! हमको तो इहाँ नौकरी करत बीस बरस होय गए।"

5. क्षेत्रीय बोलियों का भाषाई और सांस्कृतिक महत्व
क्षेत्रीय बोलियाँ केवल संचार का माध्यम ही नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक पहचान और विरासत का भी अभिन्न अंग हैं। ये बोलियाँ स्थानीय परंपराओं, रीति-रिवाजों, त्योहारों और जीवन-शैली को दर्शाती हैं।

5.1 सांस्कृतिक पहचान और विविधता
क्षेत्रीय बोलियाँ विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और विविधता को बनाए रखती हैं। इनके माध्यम से स्थानीय संस्कृति, परंपराएँ और जीवन-मूल्य आगे की पीढ़ियों तक संप्रेषित होते हैं। उदाहरण के लिए, ब्रज क्षेत्र की होली, अवध क्षेत्र की रामलीला, भोजपुरी क्षेत्र के छठ पर्व से संबंधित

© 2025 डॉ सरयू शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लोकगीत अपनी-अपनी बोलियों में ही अधिक प्रभावशाली और सार्थक होते हैं।

5.2 भाषाई विकास में योगदान

क्षेत्रीय बोलियाँ हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन बोलियों से अनेक शब्द, मुहावरे और अभिव्यक्तियाँ मानक हिंदी में शामिल हुई हैं, जिससे हिंदी भाषा का शब्द भंडार और अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि हुई है।

5.3 लोक साहित्य का संरक्षण

क्षेत्रीय बोलियों में रचित लोक साहित्य - लोकगीत, लोककथाएँ, पहेलियाँ, मुहावरे, कहावतें आदि - सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इन बोलियों के माध्यम से यह लोक साहित्य पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता है और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होता है।

6. क्षेत्रीय बोलियों के समक्ष चुनौतियाँ और संरक्षण के प्रयास

6.1 वर्तमान चुनौतियाँ

आधुनिक समय में क्षेत्रीय बोलियाँ अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं:

1. **वैश्वीकरण का प्रभाव**: अंग्रेजी और अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं के बढ़ते प्रभाव से क्षेत्रीय बोलियाँ पीछे हट रही हैं।
2. **मीडिया और शिक्षा में उपेक्षा**: मीडिया और शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रीय बोलियों की उपेक्षा से इनका प्रचलन कम हो रहा है।
3. **नई पीढ़ी में रुचि की कमी**: नई पीढ़ी में अपनी क्षेत्रीय बोलियों के प्रति रुचि की कमी देखी जा रही है।
4. **सामाजिक प्रतिष्ठा का अभाव**: क्षेत्रीय बोलियों को अक्सर 'कम प्रतिष्ठित' माना जाता है, जिससे लोग इनका प्रयोग करने से हिचकिचाते हैं।

6.2 संरक्षण के प्रयास

क्षेत्रीय बोलियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं:

1. **शैक्षिक पाठ्यक्रमों में समावेश**: कई राज्यों में क्षेत्रीय बोलियों और उनके साहित्य को शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल किया जा रहा है।
2. **साहित्यिक कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ**: क्षेत्रीय बोलियों में साहित्यिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।
3. **डिजिटल संरक्षण**: क्षेत्रीय बोलियों में रचित साहित्य का डिजिटलीकरण किया जा रहा है और इंटरनेट पर उपलब्ध कराया जा रहा है।
4. **शोध और अध्ययन**: भाषाविदों द्वारा क्षेत्रीय बोलियों पर शोध और अध्ययन किया जा रहा है।
5. **मीडिया में प्रयोग**: रेडियो, टेलीविजन और फिल्मों में क्षेत्रीय बोलियों का प्रयोग बढ़ाया जा रहा है।

7. भविष्य की संभावनाएँ

क्षेत्रीय बोलियों और उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति के भविष्य की संभावनाएँ निम्नलिखित हैं:

1. **डिजिटल प्लेटफॉर्म पर विस्तार**: सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, वेबसाइट्स और मोबाइल एप्लिकेशन्स के माध्यम से क्षेत्रीय बोलियों का प्रचार-प्रसार बढ़ सकता है।
2. **अनुवाद और अंतर-भाषाई संवाद**: क्षेत्रीय बोलियों के साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद और अंतर-भाषाई संवाद से इनका विस्तार हो सकता है।
3. **शैक्षिक और शोध क्षेत्र में विस्तार**: क्षेत्रीय बोलियों पर शैक्षिक और शोध कार्य बढ़ाकर इनके महत्व को बढ़ाया जा सकता है।
4. **साहित्यिक नवाचार**: क्षेत्रीय बोलियों में नई साहित्यिक विधाओं और शैलियों का प्रयोग करके इन्हें आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिक बनाया जा सकता है।
5. **संस्कृति पर्यटन और स्थानीय विकास**: क्षेत्रीय बोलियों और उनसे जुड़ी संस्कृति को पर्यटन के माध्यम से बढ़ावा देकर स्थानीय विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

8. निष्कर्ष

हिंदी की क्षेत्रीय बोलियाँ हमारी भाषाई और सांस्कृतिक विरासत का अमूल्य हिस्सा हैं। ये बोलियाँ न केवल भाषाई विविधता का प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मोज़ेक के महत्वपूर्ण घटक भी हैं। इन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध और विविधतापूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रत्येक क्षेत्रीय बोली अपनी विशिष्ट भाषिक संरचना, शब्द भंडार और अभिव्यक्ति शैली के कारण अद्वितीय है। सदियों से चली आ रही ये बोलियाँ विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की उपज हैं और उस क्षेत्र के भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं को प्रतिबिंबित करती हैं। इसलिए, इन बोलियों का संरक्षण न केवल भाषाई विरासत के संरक्षण का प्रश्न है, बल्कि समग्र सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का भी महत्वपूर्ण पहलू है।

आधुनिक समय में, वैश्वीकरण और एकरूपता की बढ़ती प्रवृत्ति के बीच, इन क्षेत्रीय बोलियों का संरक्षण और संवर्धन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। इसके लिए सरकारी प्रयासों के साथ-साथ व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर भी प्रयास आवश्यक हैं।

अंत में, क्षेत्रीय बोलियों का भविष्य हमारे सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करता है। यदि हम इन बोलियों के महत्व को पहचानते हैं और इनके संरक्षण के लिए प्रयास करते हैं, तो ये बोलियाँ न केवल जीवित रहेंगी, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा और ज्ञान का स्रोत बनी रहेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तिवारी भोलानाथ. हिंदी भाषा का इतिहास. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2014.
2. श्रीवास्तव रवींद्रनाथ. भाषा विज्ञान: सिद्धांत और स्वरूप. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 2015.
3. शर्मा राजमल. हिंदी की उपभाषाएँ और बोलियाँ. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2010.

© 2025 डॉ सरयू शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. सिंह नामवर. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2012.
5. चतुर्वेदी रामस्वरूप. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2008.
6. त्रिपाठी विश्वनाथ. लोक साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 2011.
7. निगम देवशंकर. हिंदी की लोक संस्कृति. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2013.
8. पाठक रामशंकर. क्षेत्रीय बोलियों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन. प्रयाग: हिंदी साहित्य सम्मेलन; 2009.
9. मिश्र विद्यानिवास. लोक और शास्त्र. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2018.
10. वर्मा धीरेंद्र. हिंदी भाषा का आलोचनात्मक इतिहास. इलाहाबाद: हिंदुस्तानी अकादमी; 2016.
11. सक्सेना मोहन. अवधी भाषा का अध्ययन. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 2014.
12. गुप्ता मधुसूदन. ब्रज भाषा साहित्य: एक परिचय. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी; 2017.
13. पांडेय मैनेजर. भोजपुरी साहित्य का इतिहास. पटना: अभिधा प्रकाशन; 2019.
14. राय अवधेश प्रधान. क्षेत्रीय भाषाएँ और राष्ट्रीय विकास. प्रयाग: हिंदुस्तानी अकादमी; 2012.
15. सिंह अवधेश नारायण. क्षेत्रीय भाषाएँ और साहित्य. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस; 2015.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ सरयू शर्मा. This open-access article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/